गुणवत्तायुक्त लीची का जैविक उत्पादन

डा. विनोद कुमार और **अजीत कुमार द्विवेदी अनल**
राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र, मुशहरी, मुजफ्फरपुर-842002 (बिहार)

पर्यावरण के प्रति जागरूकता में उत्तरोत्तर वृद्धि, घरेलू उपभोक्ता के स्वास्थ्य का ध्यान एवं विश्व बाजार में जैविक खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग के मद्देनजर जैविक (कार्बनिक) खेती वर्तमान में काफी प्रासंगिक हो गयी है। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से उत्पादन तो बढ़ता है, परंतु इससे पर्यावरण, मिट्टी, जल एवं जलवायु प्रदूषित होती है तथा कृषि जन्य जैव विविधता पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। जैविक खेती के फायदे एवं संभावनाओं के मद्देनजर लीची की जैविक खेती की सिफारिश की जाती है। यहां हम बागवानों की जानकारी के लिए लीची की खेती की जैविक पद्धति से संबंधित कार्बनिक एवं जैव संसाधनों की चर्चा कर रहे हैं।

लीची एक उपोष्ण कटिबंधीय, सदाबहार फल वृक्ष है, जो एक विशेष जलवायु में ही अच्छी पैदावार देता है, जिसके कारण यह विश्व के कुछ राष्ट्रों में ही व्यावसायिक रूप से उगायी जाती है। भारत एक प्रमुख लीची उत्पादक देश है जहां पर लगभग 0.83 लाख हैक्टर क्षेत्रफल से 5.21 लाख टन (वर्ष 2012-13) लीची फल पैदा होती है। लीची उत्पादन में चीन पहले स्थान पर आता है, परंतु उत्पादकता की दृष्टि से भारत का सर्वोच्च स्थान है। हमारे देश में लीची की बागवानी बिहार, पश्चिम बंगाल, असम और झारखंड में प्रमुखता से की जाती है, जहां यह उत्पादकों के जीविका का एक प्रमुख स्रोत है। भारत में कुल लीची उत्पादन का 45 प्रतिशत भाग एवं 40 प्रतिशत क्षेत्र बिहार में है। देश एवं विदेशों में जैविक पद्धति द्वारा उत्पादित लीची की तेजी से बढ़ती मांग के कारण गुणवत्तायुक्त फलों के उत्पादन वृद्धि के साथ पोषक तत्वों के लिए कार्बनिक स्रोतों के प्रयोग में बढ़ावा देने की आवश्यकता बढ़ गई है। अधिकाधिक रसायनों के उपयोग से मृदा में उपयोगी सूक्ष्म जीवों की संख्या असंतुलित हो रही है। हाल के दिनों में फलों एवं सब्जियों में रासायनिक दवाओं के अवशेष अधिकतम स्वीकार्य सीमा (एम.आर.एल.) से अधिक पाये गए हैं, जो न कवेल उपभोक्ता के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती हैं, बल्कि इससे निर्यात भी प्रभावित हुआ है। जैविक लीची के फल बेहतर गुणवत्ता के साथ रासायनिक अवशेषों से रहित होते हैं, इसलिए जैविक खेती की सिफारिश की जाती है। विभिन्न राज्य सरकारें, कृषि मंत्रालय, भारत और कई